व्यंग्य

बात में से बात में से बात

-रवींद्रनाथ त्यागी

हां, तो मैं कह रहा था कि शायर भी कई तरह के होते हैं। एक तो शायर वे हैं जिनका गरेबां चाक रहता है और दूसरे वे जो कि शेरवानी पहनते हैं। शेरवानी दरअसल कहते ही उस कपड़े को हैं जिसे पहनकर शेर पड़ा जाए। आम दस्तुर यह है कि जो शायर मुशायरे में शेर अपने पढ़ता है, वह शेरवानी किसी दूसरे को पहनता है, ताकि अंडे व टमाटरों के धब्बे खुद न साफ़ करने पड़ें। चुस्त शेरवानी पहनकर मरियल शायरी भी जोशीली बन जाती है।

दुनिया में दो तरह के लोग पाए जाते हैं। एक तो वे जो बात को वहीं का वहीं खत्म कर देते हैंऔर दूसरे वे जो बात में से बराबर बात निकालते चले जाते हैं। प्याज के छिलकों की तरह यह क्रम तब तक चलता रहता है जब तक या तो प्याज ही खत्म न हो जाय या जब-तक बात-चीत के स्थान पर जूता नाम का पदार्थ ही न चलने लगे। जूता भी दो प्रकार का होता है-एक तो दाएं पैर का जूता और एक बांएं पैर का जूता। जूतों की तरह पैर भी कई तरह के होते हैं। कुछ पैर होते हैं, जिन्हें चरण कहा जाता है। जो चरण कोमल होते हैं, वे चरण कमल कहलाते हैं-'चरण कमल बंदौं हरिआई।' कुछ चरणों को पद कहा जाता है। 'पाद' शब्द से 'पादुका' बनती है जैसे 'जल' से 'ज़लौका' का निर्माण होता है। टांग और पैर में भी अंतर होता है। नंगे पैर और नंगी टांग-इन दोनों का प्रभाव आप पर अलग-अलग होता है, क्योंकि पैर पुल्लिंग होता है और टांग स्त्रीलिंग। चरण जब गति पकड़ लेते हैं, तो वे लात कहलाते हैं। पैर को पांव भी कहा जाता है। पांव और हाथी-पांव में उतना ही अंतर है जितना हममें और हाथी में। बात का और हाथी कासंबंध वैसे भी काफ़ी पुराना है-बातन हाथी पाइए, बातन हाथी पांव।'

हाथी को ही ले लीजिए। बाकी चीज़ों की तरह इसमें भी दो किस्में होती हैं। एक हाथी काला होता है और दूसरा सफेद। हाथी की भांति हथनियां भी काली और सफ़ेद होती हैं। जो हाथी काला होता है, वह बचपन में भी काला होता है। हाथी के पूत के पांव भी पालने में ही दीख जाते हैं। पूत भी दो तरह के होते हैं-एक तो कपूत और दूसरे सपूत। बिना लीक के तीन हैं शायर, शेर, सपूत। शेर भी कई तरह के होते हैं-एक तो वह जिन्हें शायर लोग मुशायरों में झूम-झूमकर पढते हैं और दूसरे वे जिन्हें सरकस में दिखाया जाता है। कुछ शायर इतने होनहार होते हैं कि उनके शेर पढने पर मुशायरा भी सरकस का मज़ा देने लगता है। ऐसे समय-सिद्ध शायरों को उस्ताद कहा जाता है।

हां, तो मैं कह रहा था कि शायर भी कई तरह के होते हैं। एक तो शायर वे हैं जिनकर गरेबां चाक रहता है और दूसरे वे जो कि शेरवानी पहनते हैं। शेरवानी दरअसल कहते ही उस कपड़े को हैं जिसे पहनकर शेर पड़ा जाए। आम दस्तुर यह है कि जो शायर मुशायरे में शेर अपने पढ़ता है, वह शेरवानी किसी दूसरे को पहनता है, ताकि अंडे व टमाटरों के धब्बे खुद न साफ़ करने पड़ें। चुस्त शेरवानी पहनकर मरियल शायरी भी जोशीली बन जाती है। जो ज़्यादा दूरदाज किस्म के शायर हैं, वे शेरवानी के नीचे लोहे का तवा लगाकर आते हैं ताकि अगर हाथापाई की स्थिति भी आ जाए तो न शेर का कुछ बिगड़े और न कुछ शायर का। जिन शायरों का गरेबां चाक रहता है उनका तो कहना भी क्या। इनमें से कुछ तो इतने प्रतिभावान होते हैं कि यदि साबुत कुर्तेवाला कोई इंसान भी उनके साथ सड़क पर निकल जाय तो आधे घंटे में वह भी उसी स्थिति में पहुंच जाए।

सड़कें भी कई तरह की होती हैं। एक तो वे सड़कें जो कि पक्की होती हैं और दूसरी वे जो कि कच्ची कहलाती हैं। कुछ सड़कें इन दोनों के बीच भी होती है और उन पर जीप चलती हैं। आज़ादी के बाद इस तरह की सड़कों की लम्बाई काफ़ी बढी है। अगर सारी सड़कें पक्की हो गईं तो देहात का मज़ा जाता रहेगा। भारतमाता ग्रामवासिनी है, अगर वह शहर चली गई तो मकान अलौट करा लेगी और वहीं रहने लगेगी। नतीजा यह होगा कि सरकार के कितने ही महकमे और अमले दिन-दहाड़े बंद हो जायेंगे। भारतमाता को गांव में ही रहना होगा। उसके दुख-दर्द दूर करने के लिये विकास अधिकार वहीं गांव में जाएगा। वह इसी अधपक्की सड़क से जाएगा। वह जीप में बैठकर जाएगा। वह वहां दिन-छिपे पहुंचेगा और नहर के या जलकूप के डाकबंगले में ठहरेगा। उसका खान-पान, तंबाकू और बाकी चीजें वही मुहय्या की जाएगी। ये बाकी चीजें काफ़ी खूबसूरत होंगी। वह मुर्गा खाएगा और नतीज़ा यह होगा कि उसके जाने के बाद गांव में फ़िर कभी सुबह नहीं होगी।

ये मुर्गे भी कई तरह के होते हैं। एक तो वह मुर्गा जो पक्षी होता है । दूसरा मुर्गा वह जो दफ़्तरों में पाया जाता है। हर अफ़सर का एक मुर्गा होता है। वह अफ़सर की तरफ़ से बांग देता है। अफ़सर को अंडे और मुर्गी लाकर देता है और वक्त जरूरत अफ़सर की तरफ़ से बाकी लोगों को चोंचे लगाता है। अफ़सर अंदर बैठा रहता है और मुस्कराता रहता है। अगर अफ़सर कभी सैंटीमेंटल हो जाता है तो वह मुर्गे के दौरे पर साथ ले जाता है। जिस अफ़सर के जितने ज़्यादा मुर्गे होते हैं, वह उतना ही ज़्यादा धाकड़ और दबंग माना जाता है। होशियार अफ़सर एक मुर्गे को दूसरे मुर्गे से लड़ाते भी रहते हैं, ताकि दोनों अपनी-अपनी रक्षा के लिये उनकी कुर्सी के आसपास मंडराते रहें। अफ़सर बनना उतना सरल नहीं, जितना कि गैर अफ़सर लोग समझते हैं। मुर्गा बनना तो और भी कठिन है।

अफ़सर भी कई तरह के होते हैं, जैसे कि फ़ौजी अफ़सर और गैरफ़ौजी अफ़सर। कुछ अफ़सर हैं कि जो जन्म से ही अफ़सर पैदा होते हैं। बाप कलक्टर था नाना जज थे, बाबा तहसीलदार थे तो इन्हें मजबूरन मुंसिफ बनना पड़ा। दूसरे अफ़सर वे हैं जो नीचे से शुरू करते हैं और रिटायर होने से कुछ वर्ष पूर्व अफ़सर बनते हैं। प्यादा जब फ़र्जी बन जाता है तब टेढा-टेढा चलता है। तीसरे अफ़सर वे हैं जिन्हें जबरदस्ती अफ़सर बनाया जाता है। बाप के वार फंड में चंदा दिया या नाना सन् बयालीस के आन्दोलन में जेल गये तो लड़के को डिप्टी कल्क्टर बनना ही पड़ेगा। उसकी यही नियति है। उस बेचारे की अपनी तबियत ही साजिदा बनने की और बनना पड़ा है हाकिम। सरकारी क्षेत्र में जो कलाकार है, वे इसी तबके के हैं।

सरकारी क्षेत्र में कला का विकास इधर बड़ी तेजी से हो रहा है। बड़े-बड़े दफ़्तरों में हाकिमों के आने पर गाने-बजाने का कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है। रजिस्टर देखने पर एक घंटा खर्च किया जाता है और नाच देखने पर पांच घंटे। नतीजा यह होता है कि इन दिनों हर महकमा एक ऐसे कर्मचारियों की तलाश में है जो कि तबला बजाना जानते हों। टाइप सीखने के साथ-साथ लोग कव्वाली गाना सीख रहे हैं। साक्षात्कार के समय बताया जाता है कि वे ड्राफ़्ट लिखना तो नहीं जानते पर ठुमरी गाना बखूबी जानते हैं। एसे लोगों को बाद में भी बड़ी कद्र होती है।

वे साल-भर रियाज़ करते हैं, जुल्फ़ें बढाते हैंऔर सालाना दौरे के मौके पर एकाध आइटम पेश करते हैं। बड़ा अफ़सर हथेलियां बजाता है, उसकी पत्नी इनाम बांटती है और मुर्गा फ़ोटो का बंदोबस्त करता है। शायर शेर पढता हैऔर सपूत जो होता है, वह हाथी की तरह खड़ा रहता है और सफ़ेद होता जाता है। बात में से बात निकलती जाती है और जो असली बात होती है, वह कभी की खत्म हो चुकी होती है।

सत्तर साल मैं के खोया, के पाया यो पन्दरा अगस्त फेर आया

सते फते नफे सविता कविता सरिता और ताई भरपाई फेर शनिवार नै जन चेतना केंद्र मैं कट्ठे होगे अर बात चाल पड़ी पन्दरा अगस्त पै। सते बोल्या - हमनै 47 मैं आज़ादी पन्दरा अगस्त नै पाई थी अर 66 मैं हरियाणा बण्या जिसकी खातर भगत सिंह नै फांसी अर गांधी जी नै गोली खाई थी। ठारा सौ सतावण मैं आज़ादी की पहली जंग लड़ी लाखां लोगां नै कुर्बानी दी थी। किसान लड़े, कारीगर लड़े, बीर लड़ी, मर्द लड़े, राजे लड़े, रजवाड़े लड़े, लजवाणे के भूरा निंघाइयां लड़े। फते बोल्या - हरियाणा मैं भी तो बहोत से लोगां नै ज्यान की बाजी लाई थी। अपने खिडवाली गाम के ग्यारा लोग शहीद हुए। नफे बोल्या - के नाम थे उनके? सते बोल्या - इनके नाम थे बही शेख, लालू बालमीकी, तिरखा बालमिकी, मोहमा शेख, जुलफी मौची, सुनार रामबक्स, बेमा बालमिकी, इदुल मौची, मुफी औला पठान, मोहर नीलगर, सायर बालमिकी, अर सुंनाकी बालमिकी। खास बात तो या सै अक खिडवाली के कई मानसां धौरे बूझी इनके बारे मैं फेर किसे नै बेरा ए कोनी इनका। सविता बोली - म्हारे हरियाणा की यादाश्त कमजोर सै। इसे करके तो पूरे देश मैं 1857 राष्ट्रीय विद्रोह की 150वीं वर्षगांठ मनाई जावण लागरी सै अर हाम हाथ पै हाथ धरे बैठे सां । कविता बोली - और के मेवात मैं सदरुदीन किसान नै अपनी शहादत दी थी। ताई भरपाई बोली - 1857 अर 1947 के बीच मैं भी तो बहोत से लोगां नै कुर्बानी दी थी देश की आज़ादी की खातिर। हरियाणा के फौजी आजाद हिंद फौज मैं शामिल हुए। गांधी, नेहरू, भगत सिंह, अंबेडकर हर नै भी तो कुर्बानी दी।

फेर सवाल यू सै अक जिसी आजादी का सपना भगत सिंह हरनै देख्या था वा आजादी म्हारे पूरे भारत मैं अर म्हारे हरियाणा मैं आई अक नहीं? इस साठ साल की आजादी मैं के खोया के पाया? नफे बोल्या - और तो बेरा न फेर हरियाणा नै तो आर्थिक मोरचे पै तरक्की के सारे रिकाट तोड़ दिये। एयरकन्डीशन्ड जीवन शैली पै पहोंचग्या हरियाणा। घर मैं, कार मैं, स्कूल मैं, दफ्तर मैं, बाजार मैं, सारै एयरकन्डीशनर छागे। साइनिंग हरियाणा सै म्हारा आज। कविता बीच में बोल पड़ी - नफे बस बहोत होली तेरे साइनिंग हरियाणा की। इसका असली रूप बहोत दूसरा सै - सफरिंग हरियाणा। आर्थिक जगत मैं जित इतनी तरक्की करी सै उड़ै ए समाजिक स्तर पै आज बी हरियाणा बहोत पाछै सै। पाछले साल का लिंग अनुपात एक हजार पै आठ सौ बीस सै। पढ़े लिख्यां मैं यो अनुपात एक हजार पै छह सौ सतरां का सै। दलितां की हालत का के जिकरा सै। महिलावां पै घरेलू अर बाहरी हिंसा बढ़ती आवै सै। नफे बोल्या - कविता तनै तो हमेशा चीजां मैं मीन-मेख काढ़ण की आदत सी होगी। ताई भरपाई बोली - मीन मेख का सवाल नहीं सै। जिस आजादी अर तरक्की का तनै जिकर करया सै वह तो दस प्रतिशत आबादी धौरे मुश्किल तै पहुंची सै। हरियाणा के 90 प्रतिशत नै जिनमैं दलित, महिला अर युवा लड़के-लड़की शामिल सैं, उननै तो मेहनत करकै हरियाणा बनाया सै फेर इस तरक्की का फल तो चाख कै बी कोनी देख लिया। हमनै आजादी के संघर्ष मैं जो जनतांत्रिक अधिकार संविधान मैं हासिल करे थे वे कड़ै पहोंचे सैं म्हारे परिवारां मैं? या पिछड़ी सोच, रूढ़िवाद अर अंधविश्वास की जड़ता अर इसके रुखालीये स्वंभू पंचायतें इनै कड़ै बड़ण दिये नागरिक अधिकार म्हारे परिवारां मैं? इननै तो आजादी सै अंतरजातीय ब्याह करण आल्यां नै फांसी तोड़ण की, फतवे करकै तबाह करण की, इननै आजादी सै दुलिना कांड की, गोहाना कांड की, हरसौला कांड की।

इन तथाकथित पंचायतां नै आजादी सै आसण्डा कांड की, जौन्धी मैं पति-पत्नी नै बाहण-भाई बणावण की। नये बास मैं माणस मरवावण की। रविदास कहगे - ऐसा चाहूं राज मैं, जहां मिलै सबन को अन्न। छोट बड़ो सब सम बसैं, रैदास रहै प्रसन्न। सोचना चाहिए आजादी का हरियाणा मैं के मतलब सै?---

- रणवीर सिंह

आधार कार्ड का अनिवार्य किया जाना

''मेरा आधार मेरी पहचान'' ये बात सिर्फ़ पहचान तक नहीं है। यह हमारी रोजी-रोटी से जुड़ गया है। एक तरफ़ सुप्रीम कोर्ट कहता है कि आधार कार्ड न होने की वजह से कोई भी सरकारी सुविधाओं से वंचित नहीं होना चाहिए। पर दूसरी तरफ़ सरकार ने हर चीज़ के लिये आधार कार्ड को महत्वपूर्ण कर दिया है।

1-यदि आपके ईएसआईसी कार्ड में आधार कार्ड नम्बर लिंक नहीं है तो आप ईएसआईसी से मिलने वाली सुविधाएं नहीं ले पायेंगे।

2-आधार कार्ड को पैन नम्बर से लिंक नहीं करोगे तो आप आयकर रिटर्न नहीं भर सकेंगे।

3-आधार नहीं है तो आपका पैन कार्ड नहीं बन सकता।

4-आधार कार्ड है तो गैस की सब्सिडी है। गैस चाहिए तो अपने गैस कनेक्शन को आधार से जोड़ना पड़ेगा तथा आप गैस की सब्सिडी का फ़ायदा उठा सकेंगे। और बैंक खाते को भी अपने आधार से लिंक कराना होगा।

आपको चाहे स्कूल में बच्चे को प्रवेश कराना हो, आपको नया सिम कार्ड लेना हो बैंक में नया खाता खुलवाना हो, चाहे पी.एफ़. से अपने पैसे निकलवाने हों और तो और श्मशान में मृत व्यक्ति का आधार कार्ड होना चाहिये।

1 जुलाई 2017 से जिस व्यक्ति के पास आधार है उसी व्यक्ति को नौकरी मिलेगी मतलब प्रोविडेंट फंड विभाग से 1 जुलाई 2017 से उन्हीं लोगों का यूएएन जारी किया जायेगा जिनके पास आधार कार्ड है लेकिन पी एफ़ विभाग ने इसके लिये कोई नोटिफिकेशन ज़ारी नहीं किया है। पीएफ़ विभाग ने यह बदलाव अपनी पीएफ़ की वेबसाईट डब्लू डब्लू डब्लू एफेन्डीया पर अनिवार्य कर दिया है जिसकी वजह से उन कर्मचारियों के यूएएन (यूनिवर्सल एकाउंट नम्बर) जारी नहीं हो पा रहे हैं जिनका आधार कार्ड नहीं है और जिन कर्मचारियों के आधार कार्ड पर केवल सन् लिखा है व उन पर तारीख और महीना नहीं लिखा है उन लोगों के भी यूएएन जारी नहीं हो पा रहे हैं। किस्सा यही नहीं रुकता जो लोग अर्न्ताष्ट्रीय वर्कर हैं उन लोगों का तो आधार कार्ड ही नहीं होता। उनका भी काम रूक गया है। छोटे से छोटा और बड़े से बड़ा पूंजीपति किसी भी तरह का हर्जाना नहीं भरना चाहता इसलिये पूंजीपतियों ने नई भर्ती पर रोक लगा रखी है।

आधार न होने की वजह से कितने ही लोगों को नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा। सुप्रीम कोर्ट के बार-बार कहने के बावजूद कि सरकारी सुविधाओं के लिये आधार आवश्यक नहीं है, सरकार सभी सरकारी व गैर सरकारी चीज़ों के लिये आधार को आवश्यक करती जा रही है। पर इसके बावजूद सुप्रीम कोर्ट इसे रोकने के लिये किसी प्रकार का आदेश जारी नहीं कर रहा है। एक तरफ़ सुप्रीम कोर्ट आधार को महत्वपूर्ण नहीं मानती वहीं सरकार ने हर चीज़ के लिये आधार को मुख्य बना दिया है।

-स्नेह, दिल्ली